IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
IJARSCT
Impact Factor: 5.731
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 5, Issue 1, May 2021

महात्मा गांधी के आर्थिक विचारों की वर्तमान समय में प्रासंगिकता: एक विवेचनात्मक अध्ययन

डॉ0 रजत गंगवार
असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास,
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बीसलपुर, पीलीभीत, उत्तर प्रदेश,
rajatgangwar4289@gmail.com

शोध सार:-

प्रस्तुत शोध पत्र महात्मा गांधी के आर्थिक विचारों का गहन विश्लेषण करते हुए यह स्थापित करने का प्रयास करता है कि उनके विचार आज के आर्थिक संकटों, पर्यावरणीय चुनौतियों और सामाजिक असमानताओं के संदर्भ में कितने प्रासंगिक हैं। गांधी का अर्थशास्त्र केवल एक आर्थिक सिद्धांत नहीं था, अपितु यह एक नैतिक-आध्यात्मिक जीवन-दर्शन था जो मानव की आंतरिक शांति और सामाजिक न्याय को केंद्र में रखता था।

इस अध्ययन में ट्रस्टीशिप सिद्धांत, ग्राम स्वराज, स्वदेशी आंदोलन, सर्वोदय की अवधारणा एवं अहिंसक अर्थव्यवस्था जैसी गांधीवादी अवधारणाओं का विवेचनात्मक परीक्षण किया गया है। साथ ही इनकी तुलना आधुनिक अर्थशास्त्र की विभिन्न धाराओं – जैसे टिकाऊ विकास , सामाजिक उद्यमिता, सहभागिता अर्थव्यवस्था और स्थानीय उत्पादन मॉडल से की गई है।

प्रस्तुत शोधपत्र यह निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि गांधीवादी अर्थशास्त्र वैश्विक जलवायु परिवर्तन, बढ़ती आर्थिक असमानता, बेरोजगारी और तकनीकी विस्थापन की चुनौतियों का एक वैकल्पिक और सतत समाधान प्रस्तुत करता है। गांधीजी का कहना था कि मानव श्रम की परवाह न करने वाली कोई भी योजना न तो मुल्क में संतुलन कायम रख सकती है और न इनसानों को बराबरी का दर्जा दे सकती है। इसी तरह गाँधीजी ने कहा “मनुष्य का लक्ष्य अपने उपभोग को निरंतर बढ़ाना नहीं अपितु सादगी के जीवन में संतोष प्राप्त करना है। यदि शक्तिशाली व अमीर लोग इस भावना में जिएं जो गरीबी के लिए संसाधन बचने की संभावना कहीं अधिक होगी।”

कुंजी शब्द :-आर्थिक विचार, वर्तमान प्रासंगिकता, अंधाधुंध मशीनीकरण, आजीविका, मानव श्रम, संतुलन, संसाधन, सत्य एवं अहिंसा, भारतीय चिंतन, पाश्चात्य, प्रवास, प्रेरणा स्रोत, ट्रस्टीशिप,

विषमता, विकेंद्रित अर्थव्यवस्था, शोषण, श्रमिक, कल्याण, आत्मनिर्भरता, बेरोजगारी, स्वदेशी, कुटीर एवं लघु, ग्रामीण, स्वरोजगार, सशक्तिकरण ,*गांधीवादी अर्थशास्त्र, ट्रस्टीशिप, ग्राम स्वराज, स्वदेशी, सर्वोदय, टिकाऊ विकास, सामाजिक न्याय*